

डॉ. जेम्स एस. स्पीगल, ईसाई नैतिकता, सत्र 2, नैतिक सापेक्षवाद

© 2024 जिम स्पीगल और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. जेम्स एस. स्पीगल द्वारा ईसाई नैतिकता पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 2 है, नैतिक सापेक्षवाद।

नमस्ते, आइए प्रमुख नैतिक सिद्धांतों पर नज़र डालना शुरू करें।

हम जो करने जा रहे हैं, वह नैतिक सापेक्षवाद पर एक नज़र से शुरू होता है। मैं जो करना चाहता हूँ, वह यह है कि सबसे पहले यह स्थापित करना है कि नैतिक सत्य जैसी कोई चीज़ होती है और नैतिक मूल्यों में वस्तुनिष्ठ सत्य मूल्य होते हैं। ऐसा करते हुए, मैं इस दृष्टिकोण की आलोचना करना चाहता हूँ, जिसे नैतिक सापेक्षवाद के रूप में जाना जाता है।

ऐसा करने के बाद, हम प्रमुख नैतिक सिद्धांतों को देखना शुरू करेंगे, जो वस्तुवादी प्रकृति के हैं या जो नैतिक सत्य की वास्तविकता की पुष्टि करते हैं। इसलिए हम नैतिक सापेक्षवाद को कुछ सामग्री की मदद से देखेंगे जो मैंने जेम्स रेचेल की नैतिकता पर समकालीन क्लासिक पुस्तक *द एलिमेंट्स ऑफ़ मोरल फिलॉसफी* से ली है। यह पुस्तक वास्तव में दर्शन के इतिहास में सबसे अधिक बिकने वाली पुस्तक है।

मुझे लगता है कि यह अपने नौवें या दसवें संस्करण में है। और इसका इस्तेमाल कई कक्षाओं और कॉलेज के नैतिकता पाठ्यक्रमों में किया गया है। यही कारण है कि इसकी बिक्री प्लेटो की रिपब्लिक और अरस्तू की निकोमैचेन एथिक्स जैसी किताबों से भी ज़्यादा है।

तो, मैं राहेल की नैतिक सापेक्षवाद की चर्चा से कुछ सीखूंगा। और यह दिलचस्प है कि राहेल खुद नास्तिक थे। उनकी मृत्यु पांच, दस साल पहले हो चुकी है, इसलिए मुझे लगता है कि अब वह नास्तिक नहीं हैं।

लेकिन वह नास्तिक थे लेकिन फिर भी उन्हें यकीन था कि नैतिक सत्य जैसी कोई चीज़ होती है। उन्होंने सापेक्षवाद को खारिज कर दिया। वास्तव में, दार्शनिकों का भारी बहुमत, भले ही वे नास्तिक या अज्ञेयवादी हों, किसी न किसी तरह के पूर्ण नैतिक सत्य में विश्वास करते हैं, जो ध्यान देने योग्य बात है।

दार्शनिकों और नैतिकता में पीएचडी करने वालों में सापेक्षतावादी बहुत कम हैं। तो यह आपको नैतिक सापेक्षतावाद और इसकी व्यावहारिकता के बारे में कुछ बताता है, भले ही नास्तिक इस दृष्टिकोण को अस्वीकार करते हों। तो, नैतिक सापेक्षतावाद क्या है? आम तौर पर, सापेक्षतावाद एक ऐसा दृष्टिकोण है जिसके अनुसार कोई भी पूर्ण नैतिक मूल्य नहीं है जो हर समय और हर जगह लागू हो।

अब, हो सकता है। वास्तव में, बहुत सारे मूल्य सापेक्ष हैं। ऐसी कई प्रथाएँ हैं जिन्हें हम किसी विशेष संस्कृति और उसकी परंपराओं के सही या गलत होने के सापेक्ष कह सकते हैं, इत्यादि। लेकिन नैतिक सापेक्षवाद कहता है कि सभी मूल्य या तो किसी संस्कृति या किसी व्यक्ति की व्यक्तिगत प्राथमिकताओं के सापेक्ष होते हैं।

इसलिए, सापेक्षवाद के विभिन्न प्रकारों के बीच एक महत्वपूर्ण दोहरा अंतर है। सांस्कृतिक सापेक्षवादी और नैतिक व्यक्तिपरकवादी हैं। ये सापेक्षवाद के दो रूप हैं।

इसलिए, सांस्कृतिक सापेक्षतावादी कहते हैं कि नैतिक मूल्यों को हमेशा एक संस्कृति और उसकी परंपराओं या उसके लोकाचार और रीति-रिवाजों द्वारा परिभाषित किया जाता है। नैतिक व्यक्तिवादी प्रत्येक व्यक्ति को सापेक्ष मानते हैं, और यह व्यक्तिगत पसंद का मामला है कि कोई दी गई चीज़ सही है या गलत। तो, आइए सांस्कृतिक सापेक्षतावाद को देखकर शुरू करें।

अब, यह एक ऐसा दृष्टिकोण है जो वास्तव में 20वीं सदी की शुरुआत और मध्य में सांस्कृतिक नृविज्ञान में की गई प्रगति के कारण प्रमुखता में आया। सुमनेर और बेनेडिक्ट, रूथ बेनेडिक्ट जैसे विद्वान और अन्य जो दुनिया के विभिन्न हिस्सों के लोगों के समूहों का बारीकी से अध्ययन कर रहे थे, उन्होंने पाया कि जिस तरह से वे खुद का आचरण करते हैं या उनके मूल्य कई मामलों में उन प्रथाओं और मूल्यों से बहुत अलग हैं जो हम यहाँ उत्तरी अमेरिका या संयुक्त राज्य अमेरिका में रखते हैं। इसने बहुत से विद्वानों को इस संभावना पर विचार करने के लिए प्रेरित किया कि शायद व्यवहार करने के अलग-अलग सही और उचित तरीके हैं, यहाँ तक कि जब बात उन चीज़ों की आती है जिन्हें हम सबसे ज़्यादा प्रिय मानते हैं, जैसे कि विवाह और हत्या के बारे में हमारे विचार और हम अपने बच्चों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं।

हमारी कुछ सबसे बुनियादी मान्यताएँ यह हैं कि अन्य संस्कृतियों में ऐसे लोग हैं जो बहुत अलग विचार रखते हैं और अपने जीवन को बहुत अलग तरीके से जीते हैं। इसलिए इसने बहुत से लोगों के लिए एक तरह का संदेह पैदा किया कि, हम्म, शायद यहाँ कोई पूर्ण सत्य नहीं है। इसलिए, किसी विशेष नैतिक सिद्धांत की पुष्टि करने का एक तरीका यह पूछना है कि वे किसी कथन को कैसे परिभाषित या अनुवादित करेंगे जैसे कि x अच्छा है या x बुरा या गलत है।

वास्तव में इसका क्या मतलब है? यहाँ, हम मेटा-एथिक्स नामक किसी चीज़ में तल्लीनता से उतरते हैं, जो नैतिक शब्दों, अवधारणाओं और कथनों के तर्क और अर्थ का विश्लेषण करता है। इसलिए, हम सांस्कृतिक सापेक्षवाद से शुरू करते हुए, इनमें से प्रत्येक सिद्धांत का थोड़ा सा मेटा-एथिकल विश्लेषण करेंगे। सांस्कृतिक सापेक्षवादी क्या सोचते हैं कि जब हम किसी चीज़ को अच्छा या बुरा या सही या गलत या न्यायसंगत या अन्यायपूर्ण कहते हैं तो हम वास्तव में क्या कह रहे होते हैं? सांस्कृतिक सापेक्षवादी कहते हैं कि एक्स अच्छा है जैसे कथन का अर्थ है कि अगर एक्स इस संस्कृति के रीति-रिवाजों के साथ मेल खाता है या फिट बैठता है।

जब हम कहते हैं कि कुछ बुरा है, तो यह सिर्फ यह कहने का एक तरीका है कि यह इस संस्कृति के रीति-रिवाजों या काम करने के स्वीकृत और पसंदीदा तरीकों के विपरीत है। इसलिए, अगर मैं

किसी मेहमान से कहता हूँ कि तुम्हें मेज़ पर डकार नहीं लेनी चाहिए या अगर मैं अपने बच्चे से कहता हूँ कि मेज़ पर डकार मत लो। यह गलत है।

ऐसा मत करो। यह बुरा है। इसका मतलब यह है कि यह कुछ ऐसा है जो हम यहाँ नहीं करते।

हम चाहते हैं कि आप टेबल पर डकार न लें या टेबल पर गैस न छोड़ें। यह बहुत असभ्य है, और हम कह सकते हैं कि यह बुरा है या बुरा यह गलत काम है। ऐसी कई अन्य चीज़ें हैं जिन्हें हम सांस्कृतिक प्राथमिकताओं के रूप में पहचानते हैं।

निश्चित रूप से, कुछ संस्कृतियों में डकार लेना अच्छे भोजन के लिए आभार या प्रशंसा का संकेत माना जाता है। तो, निश्चित रूप से इसमें सापेक्षता है। और हम इसे पहनावे और नृत्य के तरीकों के बारे में भी कह सकते हैं।

निश्चित रूप से, कलात्मक शैलियाँ। जिस तरह से हम ट्रैफ़िक कानूनों के संदर्भ में चीज़ों को सेट करते हैं। सार्वजनिक व्यवहार के सभी प्रकार के छोटे विवरण एक संस्कृति से संबंधित हैं।

और जब आप किसी दूसरे देश में जाते हैं तो आपको यह पता चलता है। उदाहरण के लिए, अलग-अलग संस्कृतियों में सवारी करने के कुछ खास तरीके अपनाए जाते हैं। आप जानते हैं कि हम ऐसा करने की प्रवृत्ति रखते हैं।

ऐसा नहीं है कि मैं कोई लिफ्ट लेने वाला व्यक्ति हूँ, लेकिन जो लोग लिफ्ट लेते हैं, वे सड़क के किनारे खड़े होकर ऐसा करते हैं। दरअसल, यह अब उतना प्रचलित नहीं है जितना पहले हुआ करता था। लेकिन पहले ऐसा करने का यही तरीका हुआ करता था।

इस तरह से अपना अंगूठा ऊपर उठाएँ। मुझे कुछ साल पहले पता चला कि अगर आप यूरोप के कुछ देशों में ऐसा करते हैं, तो लोग चौंक जाएँगे। क्यों? क्योंकि यह मूल रूप से लोगों को सेक्स के लिए उकसाना है, है न? इस कारण से अंगूठा ऊपर उठाने का इशारा अश्लील है।

तो, यहाँ सापेक्षता है। मैंने कहा, तो फिर, आप सवारी कैसे पकड़ते हैं? आप मोटर चालकों को कैसे संकेत देते हैं कि आप कहीं सवारी पकड़ना चाहते हैं? वे कहते हैं, ठीक है, आप इसे इस तरह करते हैं। आप अपनी तर्जनी उंगली लेते हैं, और आप नीचे की ओर इशारा करते हैं।

तो, मैंने कहा कि अगर मुझे कभी यूरोप में लिफ्ट लेने की ज़रूरत पड़े तो यह जानना अच्छा रहेगा। तो निश्चित रूप से सापेक्षता है जो मानव व्यवहार के सभी प्रकार के क्षेत्रों पर लागू होती है, है न? लेकिन सवाल यह है कि क्या सभी मानव व्यवहार सांस्कृतिक रूप से सापेक्ष हैं? क्या यह सब टेबल पर डकार लेने या लिफ्ट लेने के लिए हाथ के इशारे जैसा है? क्या यह सब सांस्कृतिक वरीयता का मामला है? सांस्कृतिक सापेक्षवादी हाँ कहते हैं। नैतिक निरपेक्षतावादी या वस्तुवादी नहीं कहते हैं।

कुछ सार्वभौमिक मूल्य हैं जो सभी के लिए सार्वभौमिक रूप से सत्य हैं। कुछ चीजें बिल्कुल गलत हैं, चाहे आप उन्हें कहीं भी और कभी भी करें। कुछ अन्य चीजें हैं जो बिल्कुल अच्छी और सही हैं, चाहे आप उन्हें कहीं भी और कभी भी करें।

तो, हम सांस्कृतिक सापेक्षवादियों से क्या कहते हैं? हम कैसे जवाब दे सकते हैं? खैर, सबसे पहले, आइए तर्क पर विचार करें। मुख्य तर्क जो सांस्कृतिक सापेक्षवादी अपने दृष्टिकोण के बचाव में इस्तेमाल करते हैं। रेचल इसे सांस्कृतिक अंतर तर्क कहते हैं।

और अगर आप किसी ऐसे व्यक्ति से मिलते हैं जो सांस्कृतिक सापेक्षवादी है और आप उनसे उनके दृष्टिकोण के लिए कारण पूछते हैं, कि वे ऐसा क्यों मानते हैं, तो वे आपको यही तर्क देंगे। सांस्कृतिक अंतर तर्क के कुछ संस्करण में सबसे पहले कहा गया है कि विभिन्न संस्कृतियों में अलग-अलग नैतिक संहिताएँ हैं। विभिन्न संस्कृतियों में विभिन्न प्रकार की नैतिक संहिताएँ हैं।

और फिर, आम तौर पर, वे वहाँ से सीधे इस निष्कर्ष पर पहुँच जाते हैं कि नैतिकता में कोई वस्तुनिष्ठ सत्य नहीं है। और कई बार, इसे एक प्रश्न के साथ व्यक्त किया जाता है। आप जानते हैं, आप कैसे कह सकते हैं कि जीने का सिर्फ़ एक ही सही तरीका है, जबकि दूसरी संस्कृतियों के लोग इसे आपसे बहुत अलग तरीके से करते हैं? आप ऐसा कैसे कह सकते हैं? मुझे लगता है कि यह एक तरह का सुकराती दृष्टिकोण है।

बस एक सवाल के रूप में तर्क प्रस्तुत कर रहा हूँ। धारणा यह है कि ऐसा कहना आपकी मूर्खता है। कोई भी व्यक्ति अपने सही दिमाग से यह नहीं कहेगा कि यौन व्यवहार करने का सिर्फ़ एक ही सही तरीका है, उदाहरण के लिए।

या फिर इस संदर्भ में कि हमें उन लोगों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए जो मर रहे हैं, जो असहनीय दर्द में हैं। आप कौन होते हैं यह कहने वाले कि उस स्थिति से निपटने का सिर्फ़ एक ही सही तरीका है? या गर्भपात के मुद्दे से निपटने का एक ही सही तरीका है? और इसी तरह। तो, सांस्कृतिक मतभेदों का तर्क मूल रूप से विश्वासों और मूल्यों की बहुलता से इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि जब किसी विशेष नैतिक मुद्दे की बात आती है तो कोई एक सही या सच्चा मूल्य नहीं होता है।

अब, हम इस पर क्या कहेंगे? तार्किक दृष्टिकोण से, इस तर्क में एक बहुत ही बुनियादी दोष है। और वह यह है कि बहुलता का अर्थ सापेक्षता नहीं है। किसी भी चीज़ पर विचारों की बहुलता का अर्थ यह नहीं है कि कोई एक सच्चा दृष्टिकोण नहीं है।

सिर्फ़ इसलिए कि लोग किसी मुद्दे पर असहमत हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि उस मुद्दे के बारे में कोई एक सच्चाई नहीं है। खगोल विज्ञान पर विचार करें। खगोल विज्ञान के इतिहास में, प्राचीन पूर्व-सुकरात दार्शनिकों के समय से, कई तरह के विचार रहे हैं।

तीन प्रमुख दृष्टिकोण। एक है सपाट पृथ्वी सिद्धांत, जो कहता है कि पृथ्वी सपाट है और संभवतः पानी से घिरी हुई है। वह किस पर टिकी हुई है? पृथ्वी क्या है, यह किस पर आधारित है? आप

जानते हैं, ऐसे कई सिद्धांत थे और रहे हैं और शायद अभी भी हैं जो सपाट पृथ्वी के समर्थक प्रस्तावित करते हैं।

लेकिन यह विचार कि पृथ्वी चपटी है, एक ऐसा दृष्टिकोण है जिसे इतिहास में बहुत से लोगों ने अपनाया है। दूसरा दृष्टिकोण भूकेन्द्रित दृष्टिकोण है, जिसके अनुसार पृथ्वी अंतरिक्ष में तैर रही है और सूर्य, साथ ही विभिन्न ग्रह और तारे इसकी परिक्रमा करते हैं। फिर, तीसरा दृष्टिकोण, जो मैं और संभवतः आप भी रखते हैं, सूर्यकेन्द्रित दृष्टिकोण है।

और वह यह कि पृथ्वी उन कई ग्रहों में से एक है जो सूर्य की परिक्रमा कर रहे हैं। और सूर्य हमारे सौरमंडल के केंद्र में है। ये विचार एक दूसरे से मेल नहीं खाते।

एक ही समय में सूर्य-केन्द्रवादी और भू-केन्द्रवादी नहीं हो सकते या एक ही समय में सपाट पृथ्वी और भू-केन्द्रवाद की पुष्टि नहीं कर सकते। आपको वास्तव में चुनना होगा। लेकिन वहाँ कई तरह के विचार हैं।

आज भी, विभिन्न संस्कृतियों में, और यहाँ तक कि इस संस्कृति में भी, ऐसे लोग हैं जो भू-केन्द्रवादी होने के साथ-साथ सपाट पृथ्वी के भी समर्थक हैं। वास्तव में, मैंने देखा है कि सपाट पृथ्वी सिद्धांत ने थोड़ी वापसी की है। और आज कुछ प्रमुख एथलीट और मनोरंजनकर्ता हैं जो वास्तव में सपाट पृथ्वी सिद्धांतकार हैं।

आप बम्पर स्टिकर देख सकते हैं। हो सकता है कि आपने बम्पर स्टिकर देखा हो जिस पर लिखा हो, एक बार जब आप सपाट हो जाते हैं, तो आप कभी वापस नहीं आते। ऐसे लोग हैं जो बहुत बुद्धिमान लगते हैं, यहाँ तक कि इस संस्कृति में जाने-माने लोग भी हैं, जो सपाट पृथ्वी के सिद्धांतकार हैं।

अब, क्या इसका मतलब यह है कि खगोल विज्ञान और इन सभी खगोलीय पिंडों के सापेक्ष पृथ्वी की स्थिति के मामले में कोई सच्चाई नहीं है? देखिए, आपके पास समतल पृथ्वी और भू-केन्द्रवादी और सूर्य-केन्द्रवादी हैं। कौन कहता है, आप कौन होते हैं यह कहने वाले कि सूर्य हमारे सौर मंडल के केंद्र में है और पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर लगा रही है? आप कौन होते हैं यह कहने वाले? आप इस सवाल का जवाब कैसे देंगे? उम्मीद है, आप कहेंगे, ठीक है, मैं इस सिद्धांत के बारे में कुछ हद तक शिक्षित हूँ। मैं बुनियादी भौतिकी और खगोल विज्ञान को समझता हूँ।

और मैं समझता हूँ कि वास्तव में, मैं उन वैज्ञानिकों के बीच एक निश्चित सर्वसम्मति मानता हूँ जो खगोल विज्ञान और ब्रह्मांड विज्ञान के विशेषज्ञ हैं, जो अनुभवजन्य रूप से यह प्रदर्शित कर सकते हैं कि यह मामला है, कि सूर्यकेन्द्रवाद सत्य है। समतल पृथ्वी के लोगों के प्रति पूरे सम्मान के साथ, भूकेन्द्रवादियों के प्रति पूरे सम्मान के साथ, इस मामले की एक सच्चाई है जो अच्छे कारणों और सबूतों पर आधारित है जो उनके दृष्टिकोण का खंडन करती है। इसलिए हम खगोल विज्ञान के बारे में इसे स्वीकार करते हैं।

हम मानते हैं कि सिर्फ इसलिए कि विचारों की बहुलता है, इसका यह मतलब नहीं है कि कोई एक सत्य नहीं है। इसलिए, मुझे लगता है कि यह यहाँ एक महत्वपूर्ण सादृश्य है और कुछ ऐसा है

जो हम सांस्कृतिक सापेक्षवादियों से कह सकते हैं जब वे पीछे हटते हैं और जोर देते हैं कि नैतिकता में विचारों की विविधता का अर्थ है कि कोई सत्य नहीं है। हम खगोल विज्ञान में ऐसा निष्कर्ष नहीं निकालते हैं।

हमें यहाँ ऐसा क्यों कहना चाहिए? खैर, यहीं पर सांस्कृतिक सापेक्षवादी अपने तर्क को विस्तृत और मजबूत करते हैं, यह आधार जोड़कर कि विज्ञान के विपरीत, वस्तुनिष्ठ सत्य और नैतिकता का निर्धारण करने के लिए कोई विश्वसनीय तरीका नहीं है। हमारे पास खगोल विज्ञान, जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान आदि के बारे में सत्य निर्धारित करने के लिए संसाधन, तकनीक और विज्ञान है। हमारे पास यहाँ ऐसा नहीं है।

इसलिए, इसी कारण से हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि कोई वस्तुनिष्ठ सत्य और नैतिकता नहीं है। तो यह सांस्कृतिक मतभेदों के तर्क का थोड़ा विस्तारित, मजबूत संस्करण है। अब हम इस पर क्या कहें? निश्चित रूप से, विज्ञान में सत्य की खोज और नैतिकता में सत्य की खोज के बीच एक अंतर है, है न ?

शायद वे सही हों। शायद नैतिक सत्य की खोज के लिए विज्ञान की तरह कोई तरीका नहीं है। खैर, सांस्कृतिक मतभेदों के तर्क के इस बेहतर संस्करण के जवाब में, हम ध्यान दे सकते हैं कि तर्क अभी भी अमान्य है।

वैध तर्क वह होता है जिसमें आधार निष्कर्ष की सत्यता को दर्शाता है। यदि आधार सत्य है, तो निष्कर्ष भी सत्य होना चाहिए। यही वैध तर्क की परिभाषा है।

लेकिन ध्यान दें, जब सांस्कृतिक अंतर के तर्क की बात आती है, तो इसके संशोधित संस्करण में भी निष्कर्ष नहीं निकलता है। अगर हम मानते हैं कि अलग-अलग संस्कृतियों में अलग-अलग नैतिक संहिताएँ हैं, और वे हैं, और हम मानते हैं कि वस्तुनिष्ठ सत्य और नैतिकता का निर्धारण करने के लिए कोई विश्वसनीय तरीका नहीं है, और चलिए, तर्क के लिए, मान लेते हैं कि, क्या इसका मतलब यह है कि नैतिकता में कोई वस्तुनिष्ठ सत्य नहीं है? खैर, नहीं, ऐसा नहीं है। और फिर, हम इसे साबित करने के लिए विज्ञान के इतिहास में जा सकते हैं।

मान लीजिए, 7वीं शताब्दी या 12वीं शताब्दी ई. में, क्या ब्रह्मांड में पृथ्वी के स्थान के संबंध में खगोल विज्ञान में सत्य का पता लगाने के लिए कोई विश्वसनीय तरीका था? नहीं, ऐसा नहीं था। आपके पास, हमारे पास वास्तव में शक्तिशाली दूरबीनें नहीं थीं, या आधुनिक काल की शुरुआत तक पर्याप्त शक्तिशाली दूरबीनें नहीं थीं। और ब्रह्मांड की खोज के साधन बहुत सीमित थे, आप जानते हैं, मान लीजिए, 1,500 साल पहले, ऐसे कि इस प्रश्न के बारे में निश्चित निष्कर्ष नहीं निकाले जा सकते थे।

तो, इतने सालों पहले ब्रह्मांड में पृथ्वी के स्थान के बारे में सच्चाई का पता लगाने के लिए कोई विश्वसनीय तरीका नहीं था। लेकिन, क्या यह अभी भी सच नहीं था कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूम रही थी, अपनी धुरी पर घूम रही थी, ठीक है, सूर्य के चारों ओर घूम रही थी, इन सभी अन्य ग्रहों के साथ, भले ही हमारे पास सच्चाई का पता लगाने के लिए कोई विश्वसनीय तरीका नहीं था? खैर,

हाँ, यह था। तो, आप अभी भी वस्तुनिष्ठ सत्य पा सकते हैं, इस मामले में, विज्ञान में, भले ही हमारे पास उस सत्य को निर्धारित करने के लिए कोई विश्वसनीय तरीका न हो।

तो यह एक महत्वपूर्ण अंतर है। यह दर्शाता है कि यह तर्क अमान्य है। लेकिन फिर हम यह भी जोड़ सकते हैं कि नैतिक सत्य का पता लगाने के लिए एक विश्वसनीय तरीका है।

हम तर्क, मानवीय अनुभव और, यदि ऐसा कुछ है, तो ईश्वर से एक विशेष रहस्योद्घाटन से परामर्श कर सकते हैं, जिसे, ईसाई होने के नाते, हम मानते हैं कि शास्त्र बिल्कुल वैसा ही है। ईश्वरीय प्रेरणा से प्रेरित पाठ हमें मार्गदर्शन देता है, विशेष रूप से नैतिकता के क्षेत्र में, इस बारे में कि हमें ईश्वर के सामने कैसे जीना चाहिए, साथ ही हमें वास्तविकता की अंतिम प्रकृति, ईश्वर की प्रकृति, साथ ही ऐतिहासिक सत्यों के बारे में आध्यात्मिक सत्य बताता है। लेकिन विशेष रहस्योद्घाटन, पुराने और नए नियम की पुस्तकों की सहायता से, और उन ग्रंथों पर तर्क और अनुभव को सावधानीपूर्वक लागू करके, हम इस बारे में उचित निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं कि हमें अपना जीवन कैसे जीना चाहिए।

तो यही हम सांस्कृतिक सापेक्षतावादियों के सबसे अच्छे तर्क के जवाब में कह सकते हैं, जो कि सांस्कृतिक अंतर का तर्क है। सांस्कृतिक सापेक्षतावाद और उसके बचाव के लिए यह सबसे अच्छा तर्क है। तो, यह तर्क विफल हो जाता है।

लेकिन अब, सांस्कृतिक सापेक्षवाद की हमारी आलोचना इससे भी आगे जा सकती है, और वह यह है कि सांस्कृतिक सापेक्षवाद के कई बहुत ही समस्यात्मक परिणाम हैं। और मुझे लगता है कि यही मुख्य कारण हैं कि आपको एक नास्तिक दार्शनिक को खोजने में मुश्किल होगी जो एक सांस्कृतिक सापेक्षवादी हो क्योंकि ये समस्याएँ बहुत गंभीर हैं। और क्योंकि, जैसा कि सीएस लुईस ने अपने क्लासिक काम, मेर क्रिश्चियनिटी के शुरुआती पन्नों में लिखा है, कोई भी वास्तव में एक सांस्कृतिक सापेक्षवादी या किसी भी तरह के सापेक्षवादी की तरह व्यवहार नहीं करता है।

हम लोगों को उनके गलत कामों के लिए जिम्मेदार ठहराते हैं। गाड़ी चलाते समय कोई भी सापेक्षवादी नहीं होता। हाईवे पर कोई आपको काटता है, है न? आप किसी तरह का नैतिक निर्णय लेने जा रहे हैं, भले ही यह चुपचाप अपने आप में ही क्यों न हो।

उसे ऐसा नहीं करना चाहिए था। उसने मुझे रोक दिया। यह गलत था।

या फिर हम यह सीखते हैं कि दूर किसी दूसरी संस्कृति में कुछ लोग क्या कर रहे हैं। हम कहते हैं, वाह, वे ऐसा करते हैं? यह भयानक है। यह अन्याय है।

यह मानवाधिकारों का उल्लंघन है, है न? यहां तक कि कट्टर नास्तिक भी समय-समय पर ऐसा कहते हैं। और इससे पता चलता है कि वे वास्तव में सापेक्षवादी नहीं हैं। वे नैतिक निरपेक्षता में विश्वास करते हैं।

तो सांस्कृतिक सापेक्षवाद को अस्वीकार करने के कुछ दार्शनिक कारण यहां दिए गए हैं। और एक यह है कि यह अन्य समाजों के मूल्यों की आलोचना को असंभव बनाता है। यदि आप एक सांस्कृतिक सापेक्षवादी हैं, तो आप नाज़ियों द्वारा किए गए कार्यों की आलोचना नहीं कर सकते।

आप किसी नरसंहार करने वाले लोगों के समूह द्वारा किसी अन्य संस्कृति में किए गए कार्यों की आलोचना नहीं कर सकते। वह एक अलग संस्कृति है। सांस्कृतिक सापेक्षवाद के अनुसार, सही और गलत को किसी विशेष संस्कृति के पसंदीदा मूल्यों द्वारा परिभाषित किया जाता है।

मैं 21वीं सदी में अमेरिकी संस्कृति से बोल रहा हूँ। मैं कौन होता हूँ यह तय करने वाला कि 70 या 80 साल पहले नाज़ियों ने क्या किया था? एक सांस्कृतिक सापेक्षवादी के तौर पर आपको यही निष्कर्ष निकालना होगा। आप नाज़ियों की निंदा नहीं कर सकते।

आप अन्य संस्कृतियों में शासन की सबसे अधिक रक्तपातपूर्ण और नरसंहारकारी कार्रवाइयों की भी निंदा नहीं कर सकते। यह नैतिक प्रगति को भी असंभव बनाता है। यदि आप एक सांस्कृतिक सापेक्षवादी हैं, तो ऐसा कोई पूर्ण मानक नहीं है जिसके अनुसार हम नैतिक रूप से प्रगति या प्रतिगमन का आकलन या निर्णय कर सकें।

यदि आप मानते हैं कि हमारी संस्कृति में सुधार हो रहा है, तो हमारी संस्कृति के बाहर कुछ ऐसा मानक होना चाहिए जो हमारी संस्कृति से परे हो, जिसके अनुसार हम अपनी संस्कृति के मूल्यों की सापेक्ष योग्यता, सुधार या गिरावट का आकलन कर सकें। नैतिक प्रगति की पूरी धारणा नैतिक अच्छाई के लिए किसी प्रकार के पूर्ण पारलौकिक मानक को पूर्व निर्धारित करती है। इससे जुड़ा सांस्कृतिक सापेक्षवाद का एक और निहितार्थ है।

सांस्कृतिक सापेक्षवाद का तात्पर्य है कि सभी नैतिक सुधारक भ्रष्ट हैं। क्यों? मार्टिन लूथर किंग जैसे नैतिक सुधारकों ने वर्तमान सांस्कृतिक रीति-रिवाजों और मूल्यों के कुछ पहलुओं को चुनौती दी। मार्टिन लूथर किंग ने जिम क्रो कानूनों को सही तरीके से चुनौती दी क्योंकि वे नस्लवादी थे।

हालाँकि वे कानून इस संस्कृति में प्रचलित कुछ रीति-रिवाजों के अनुरूप थे, फिर भी उन्होंने माना कि वे गलत थे। उन्होंने उनके खिलाफ अभियान चलाया और विरोध किया और जीत हासिल की। हम उन्हें एक नायक और एक अच्छा नैतिक सुधारक मानते हैं।

लेकिन अगर सांस्कृतिक सापेक्षवाद सच है, तो आप ऐसा नहीं कर सकते। अगर व्यवहार या नैतिक सुधारकों का मूल्यांकन करने के लिए हमारे पास एकमात्र मानक वर्तमान सांस्कृतिक मूल्य हैं, तो परिभाषा के अनुसार, मार्टिन लूथर किंग जो कर रहे थे वह गलत था। वह सांस्कृतिक रीति-रिवाजों को चुनौती दे रहे थे।

अगर आप मानते हैं कि मार्टिन लूथर किंग एक अच्छे नैतिक सुधारक और यहां तक कि एक नैतिक नायक भी थे, तो इससे पता चलता है कि आप सांस्कृतिक सापेक्षवादी नहीं हैं। आप नैतिक निरपेक्षता में विश्वास करते हैं। मार्टिन लूथर किंग ने अपने कई लेखों और भाषणों में यही तर्क दिया कि कुछ उच्च नैतिक कानून हैं जो उनके अनुसार ईश्वर से आते हैं, किसी तरह ईश्वर के अस्तित्व में निहित हैं, जिसके अनुसार हम अपने वर्तमान कानूनों का मूल्यांकन कर सकते हैं।

उन्हें पूरा भरोसा था कि उस समय हम इन जिम क्रो कानूनों के ज़रिए कुछ अनैतिक काम कर रहे थे। इसलिए, वे एक नैतिक नायक थे। वे भ्रष्ट नहीं थे।

नैतिक नायक होने का अर्थ समझने का एकमात्र तरीका नैतिक निरपेक्षता में विश्वास करना और सांस्कृतिक सापेक्षतावाद को अस्वीकार करना है। इसलिए, हम इन सभी को एक साथ रख सकते हैं और सांस्कृतिक सापेक्षतावाद के खिलाफ बेतुके तर्क को कम करने की पेशकश कर सकते हैं। अगर हम मानते हैं कि सांस्कृतिक सापेक्षतावाद सच है, तो हमें यह निष्कर्ष निकालना होगा कि नाज़ी बिल्कुल गलत नहीं थे।

हमें यह निष्कर्ष निकालना होगा कि सभी नैतिक सुधारक भ्रष्ट नहीं हैं, और हमें यह निष्कर्ष निकालना होगा कि कोई भी नैतिक प्रगति संभव नहीं है। हालाँकि, नैतिक सामान्य ज्ञान वाला कोई भी व्यक्ति इन सभी निहितार्थों को अस्वीकार्य के रूप में पहचान लेगा। नाज़ी बिल्कुल गलत थे।

नैतिक प्रगति संभव है, लेकिन सभी नैतिक सुधारक भ्रष्ट नहीं हैं। इसलिए, इसका तात्पर्य यह है कि यहाँ यह धारणा कि सांस्कृतिक सापेक्षवाद सत्य है, गलत होनी चाहिए। जो कुछ भी बेतुकापन या किसी भी झूठ का संकेत देता है, वह स्वयं झूठ होना चाहिए।

तो यह सांस्कृतिक सापेक्षवाद के खिलाफ़ एक तरह का बेतुका तर्क है। ठीक है, सांस्कृतिक सापेक्षवाद के बारे में इतना ही काफी है। आइए सापेक्षवाद के दूसरे रूप के बारे में बात करें, जो नैतिक व्यक्तिपरकता है।

सांस्कृतिक सापेक्षवाद की एक समस्या यह है कि एक संस्कृति कब शुरू होती है और दूसरी कब समाप्त होती है। किस बिंदु पर मेरी वर्तमान संस्कृति दूसरी संस्कृति में विलीन हो जाती है? हम अमेरिकी संस्कृति के विपरीत यूरोपीय संस्कृति या फ्रांसीसी संस्कृति के बारे में बात कर सकते हैं, जर्मन संस्कृति या स्वीडिश संस्कृति के विपरीत। विभिन्न राष्ट्रों की अलग-अलग संस्कृतियाँ होती हैं, लेकिन किसी विशेष संस्कृति या राष्ट्र के भीतर, आपके पास उपसंस्कृतियाँ होती हैं।

संयुक्त राज्य अमेरिका में, मैंने हाल ही में टेक्सास की यात्रा की, जो इंडियाना से कुछ अलग उपसंस्कृति है। मैं कैलिफ़ोर्निया, ओरेगन, ईस्ट कोस्ट और इन सभी अलग-अलग राज्यों में जा चुका हूँ। उपसंस्कृतियाँ थोड़ी अलग हैं।

मैं इंडियाना में रहता हूँ। मैंने देखा है कि उत्तरी इंडियाना की संस्कृति दक्षिणी इंडियाना से थोड़ी अलग है, जो कि केंटकी की तरह है। उत्तरी इंडियाना मिशिगन की तरह है।

रेखा खींचना असंभव है या फिर अंतहीन है। तो, संस्कृति के रूप में क्या गिना जाता है? यह एक खुला और कठिन प्रश्न है। अगर हम सांस्कृतिक सापेक्षवाद को ठीक से समझना चाहते हैं, तो हमारे हाथों में एक बहुत बड़ा काम है।

यह शायद असंभव है। ऐसा लगता है कि आप जो एकमात्र स्पष्ट रेखा खींच सकते हैं, वह है अलग-अलग लोगों के बीच। यह स्पष्ट है कि मैं कहाँ समाप्त होता हूँ, और आप कहाँ से शुरू होते हैं।

यह जुड़वाँ बच्चों की समस्या को एक तरफ रख देता है। इससे अलग-अलग लोगों के बीच अंतर करना और भी मुश्किल हो जाता है। लेकिन ज़्यादातर मामलों में, अलग-अलग लोगों को इस आधार पर पहचाना जाता है कि एक शरीर कहाँ से शुरू होता है और दूसरा कहाँ खत्म होता है।

तो, आपके अपने मूल्य हैं, और मेरे अपने हैं। नैतिक व्यक्तिवादी कहते हैं कि यही समाधान है। प्रत्येक व्यक्ति के अपने विशेष नैतिक मूल्य होते हैं।

इसलिए, वे परिभाषित करते हैं कि उनके लिए क्या सही है। आप परिभाषित करते हैं कि आपके लिए क्या सही है। मैं परिभाषित करता हूँ कि मेरे लिए क्या सही है।

हम इसे व्यक्तिगत पसंद के आधार पर करते हैं। तो यह रहा। नैतिक सत्य का सबसे अच्छा विश्लेषण यही है।

यह प्रत्येक व्यक्ति के लिए सापेक्ष है। इसलिए, इस दृष्टिकोण से, नैतिक व्यक्तिवादी के अनुसार, x अच्छा है, जिसका अर्थ है कि इसका मतलब है कि मुझे x पसंद है। x बुरा है, जिसका अर्थ है कि मुझे यह पसंद नहीं है। निश्चित रूप से हम भोजन के मामले में चीजों का मूल्यांकन इसी तरह करते हैं।

मैं कहता हूँ, आह, ब्रसेल्स स्प्राउट्स खराब हैं। आइसक्रीम अच्छी है। मेरा क्या मतलब है? खैर, मुझे ब्रसेल्स स्प्राउट्स पसंद नहीं हैं।

और मुझे आइसक्रीम पसंद है। अब, ऐसे लोग हैं जिन्हें ब्रसेल स्प्राउट्स पसंद हैं। और उनके लिए, मैं कहता हूँ, ठीक है, यह उनके लिए अच्छा है।

मुझे यह पसंद नहीं है। मेरे लिए यह बुरा है। इसलिए, नैतिक व्यक्तिवादी कह रहे हैं कि नैतिक क्षेत्र में भी ऐसा ही है।

अगर आपको यह पसंद है, तो यह आपके लिए अच्छा है। अगर आपको यह पसंद नहीं है, तो यह आपके लिए बुरा है। अब, यह ऐसी चीज़ है जिसे निर्धारित करना बहुत आसान है।

नैतिक व्यक्तिपरकता का एक लाभ यह है कि यह सही और गलत का निर्धारण करना बहुत आसान बनाता है। तो, इच्छामृत्यु, युद्ध, मृत्युदंड, गर्भपात। इन विशेष प्रश्नों में क्या सही है और क्या गलत? आप बस खुद से पूछें, क्या मुझे इस या उस कारण से किसी देश पर युद्ध छेड़ने का विचार पसंद है? हाँ।

ठीक है। तो फिर यह सही है। मांग पर गर्भपात।

मुझे यह पसंद है या नहीं? ज़रूर। ठीक है। तो यह अच्छा है।

यह सही है। आप बस खुद से यह सवाल पूछें: क्या मुझे यह पसंद है? और यही इसका उत्तर है कि यह सही है या गलत। इसलिए नैतिक व्यक्तिपरकतावादी सांस्कृतिक सापेक्षवाद को प्रभावित करने वाली कुछ समस्याओं पर काबू पा लेते हैं, लेकिन कुछ समस्याएं अभी भी बनी हुई हैं। सबसे बड़ी समस्याओं में से एक यह है कि यह नैतिक कर्तव्य और दायित्व और अधिकारों के लिए कोई आधार या नींव प्रदान नहीं करता है, जिसके बारे में हममें से अधिकांश लोग कम से कम कहते हैं कि हम इस पर विश्वास करते हैं, कि मानवाधिकार जैसी कोई चीज है और हमारे पास दायित्व हैं।

लेकिन आप व्यक्तिपरक दृष्टिकोण से इसका अर्थ कैसे समझ सकते हैं? इस दृष्टिकोण पर बाध्यता के लिए आपके पास क्या संभावित आधार या आधार हो सकते हैं? नैतिक व्यक्तिपरकता का एक और दिलचस्प परिणाम यह है कि यह नैतिक असहमति को असंभव बना देता है। फिर से, अगर भोजन के बारे में नैतिक निर्णयों और स्वाद के निर्णयों के बीच कोई समानता है, तो यह स्पष्ट है कि आप नैतिकता में वास्तव में कोई वास्तविक असहमति नहीं रख सकते हैं, जितना कि हम, आप जानते हैं, इस बात पर असहमति रख सकते हैं कि ब्रसेल स्प्राउट्स का स्वाद अच्छा है या नहीं। आपको ब्रसेल स्प्राउट्स का स्वाद पसंद है, मुझे वे घृणित लगते हैं।

क्या हम इस बारे में कभी बहस करेंगे? यह बहस करना या बहस करना कितना मूर्खतापूर्ण होगा कि क्या ब्रसेल स्प्राउट्स का स्वाद अच्छा है? इससे हमें कुछ हासिल नहीं होगा क्योंकि हम समझते हैं कि यह सिर्फ स्वाद का मामला है। इसलिए, यह नैतिक क्षेत्र में जाता है ताकि व्यक्तिपरक व्यक्ति सुसंगत हो सके; उन्हें कहना होगा कि नैतिक बहस बेतुकी, निरर्थक और समय की बर्बादी है। गर्भपात के मुद्दे पर बहस क्यों करें जब यह सिर्फ इस बात का मामला है कि आपको यह पसंद है और मुझे यह पसंद नहीं है? फैक्टरी फ़ार्म जानवरों को ठीक करना ठीक है या नहीं, इस पर बहस क्यों करें? आपको यह पसंद नहीं है, मुझे यह पसंद है।

यह आइसक्रीम की तरह है, ब्रसेल स्प्राउट्स की तरह। इसलिए, नैतिक व्यक्तिपरकता के अनुसार हमारे बीच कोई वास्तविक नैतिक असहमति नहीं हो सकती। यहाँ निहितार्थ यही है।

लेकिन यह उनके दृष्टिकोण का एक समस्याग्रस्त निहितार्थ है क्योंकि नैतिक सामान्य ज्ञान हमें बताता है कि वास्तविक असहमति नैतिकता में होती है। कि हमारे बीच ये असहमतियाँ वास्तविक हैं और उन पर बहस करने लायक हैं। तो, यह नैतिक व्यक्तिपरकता के साथ एक और समस्या है।

इस दृष्टिकोण का एक और बेतुका निहितार्थ यह है कि यदि व्यक्तिपरकता सत्य है, तो हम किसी भी चीज़ की पूरी तरह निंदा या प्रशंसा नहीं कर सकते। क्यों? क्योंकि, फिर से, हम केवल अपनी भावनाओं और अपनी प्राथमिकताओं का वर्णन कर रहे हैं। और इसमें नाजी नरसंहार भी शामिल है।

इसमें कहीं भी नरसंहार करने वाला व्यवहार शामिल है। इसमें बच्चों को प्रताड़ित करना या बलात्कार और हत्या भी शामिल है। हो सकता है कि मुझे ये चीज़ें पसंद न हों।

मैं इन व्यवहारों से बीमार हो सकता हूँ। लेकिन अगर किसी और को यह पसंद है, तो एक व्यक्तिपरक व्यक्ति के रूप में, मुझे कहना होगा, ठीक है, तो यह उनके लिए सही है। और उम्मीद है कि इसकी बेतुकी बात स्पष्ट है।

अंत में, नैतिक व्यक्तिपरकता का दूसरा बेतुका निहितार्थ यह है कि हम अपने नैतिक निर्णयों के बारे में गलत नहीं हो सकते। यदि व्यक्तिपरकता सत्य है, तो जब तक आप अपनी भावनाओं के संपर्क में हैं और अपनी प्राथमिकताओं के बारे में जानते हैं, तब तक आप किसी भी विशेष मुद्दे के बारे में नैतिक सत्य जानते हैं। आप गलत नहीं हो सकते।

और फिर, यह नैतिक सामान्य ज्ञान के विपरीत है। गर्भपात के मुद्दे पर एक बार मेरी राय अलग थी। कई साल पहले, मैं उस मुद्दे पर गर्भपात के पक्ष में था।

जैसे-जैसे मैंने इसके बारे में और अधिक जाना, मेरा नज़रिया बदल गया। और मैं गर्भपात के मुद्दे पर नैतिक और राजनीतिक रूप से समर्थक बन गया। अब, मेरा नज़रिया बदल गया है।

नैतिक सामान्य ज्ञान हमें बताता है कि मेरा दृष्टिकोण या तो गलत था और फिर मैंने अपना दृष्टिकोण बदलकर सही दृष्टिकोण अपनाया या इसके विपरीत। हो सकता है कि मेरा दृष्टिकोण सही था, लेकिन मैं वर्तमान में गलत दृष्टिकोण रखता हूँ। लेकिन उस विशेष दृष्टिकोण को समझना, यह समझना कि मैं या तो पहले गलत था या अब गलत हूँ, आप व्यक्तिपरक दृष्टिकोण पर इसका अर्थ नहीं निकाल सकते, जिसका अर्थ है कि आप कभी गलत नहीं होते, भले ही आप दिन-प्रतिदिन अपना दृष्टिकोण बदलते रहें।

भले ही हर विषम संख्या वाले दिन आप जीवन के पक्ष में हों और हर सम संख्या वाले दिन आप चुनाव के पक्ष में हों। आप हर दिन सही हैं, बशर्ते कि उस दिन आपकी प्राथमिकता वही हो। और अगर यह बेतुका नहीं है, तो यह कहना मुश्किल है कि और क्या हो सकता है।

इसलिए, हम अपने नैतिक निर्णयों के बारे में गलत हो सकते हैं। यह नैतिक व्यक्तिपरकता का भी खंडन करता है। इसलिए, नैतिक व्यक्तिपरकता वास्तव में सांस्कृतिक सापेक्षवाद से आगे नहीं है।

यह उतना ही समस्याग्रस्त है, शायद उससे भी ज्यादा। और ये नैतिक सापेक्षवाद के दो रूप हैं, सांस्कृतिक सापेक्षवाद और नैतिक व्यक्तिपरकता। तो उम्मीद है कि अब हमने उन दो सापेक्षवादी विचारों का खंडन कर दिया है।

सापेक्षवाद आम तौर पर काम नहीं करता है, और इसलिए हमें, यदि हम कर सकें, तो कुछ वस्तुवादी या निरंकुश नैतिक सिद्धांत खोजने की आवश्यकता है जो इन सभी मुद्दों के बारे में हमारी नैतिक अंतर्ज्ञान को समझ सके, जो कर्तव्य और अधिकार और न्याय की अवधारणा को समझ सके, जो इन चीजों के लिए पर्याप्त आधार प्रदान करे, जो हमारे अंतर्ज्ञान और सामान्य ज्ञान की धारणा को समझ सके कि नैतिक असहमति वास्तविक है, और यह भी, एक संतोषजनक सिद्धांत हमें यह पहचानने में सक्षम करेगा कि कभी-कभी विदेशी संस्कृतियाँ या समूह या शासन

और विदेशी संस्कृतियाँ अनैतिक रूप से काम करती हैं, भले ही उनके विचार किसी संस्कृति के भीतर प्रचलित हों। हमें एक नैतिक सिद्धांत की आवश्यकता है जो नैतिकता के बारे में इन सभी सामान्य ज्ञान की मान्यताओं को ध्यान में रखे। और इसलिए यही वह है जो हमें प्रमुख नैतिक सिद्धांतों के हमारे सर्वेक्षण में ले जाएगा, जो हम आगे करेंगे।

यह डॉ. जेम्स एस. स्पीगल द्वारा ईसाई नैतिकता पर दिया गया व्याख्यान है। यह सत्र 2 है, नैतिक सापेक्षवाद।